Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ के साथ भारत का रणनीतिक आर्थिक सहयोग: विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए लाभ

राम सिंह असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर

ABSTRACT:

ग्लोबल साउथ के साथ भारत का रणनीतिक आर्थिक सहयोग एक महत्वपूर्ण अध्ययन का विषय है क्योंकि यह न केवल भारत की विदेश नीति और आर्थिक विकास को दर्शाता है, बल्कि वैश्विक दक्षिण के विकासशील देशों के साथ भारत के सहयोग से उभरते अवसरों को भी रेखांकित करता है। यह शोध लेख भारत द्वारा ग्लोबल साउथ में किए गए आर्थिक सहयोग की नीतियों और प्रयासों का विश्लेषण करेगा, जिससे विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ने वाले प्रभावों और लाभों का आकलन किया जा सके। भारत की बढ़ती आर्थिक शक्ति और वैश्विक मंच पर इसकी भागीदारी के संदर्भ में यह सहयोग भारत की आर्थिक रणनीतियों को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

KEYWORDS:

ग्लोबल साउथ, विकासशील अर्थव्यवस्था, गुटनिरपेक्ष आंदोलन।

परिचय

ग्लोबल साउथ एक व्यापक अवधारणा है जो उन देशों का समूह है, जिन्हें पारंपरिक रूप से विकासशील देशों या निम्न और मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्थाओं के रूप में जाना जाता है। इसमें मुख्य रूप से अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, एशिया और ओशिनिया के कई देश शामिल हैं। इस समूह का महत्व इसलिए है क्योंकि इसमें दुनिया की सबसे तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएँ हैं, जो भविष्य के वैश्विक विकास में प्रमुख भूमिका निभा सकती हैं। ग्लोबल साउथ के देशों के साथ आर्थिक सहयोग भारत के लिए न केवल व्यापारिक और निवेश संबंधी अवसर पैदा करता है, बल्कि भू-राजनीतिक दृष्टिकोण से भी यह भारत के प्रभाव और नेतृत्व की स्थापना का एक साधन है।

भारत और ग्लोबल साउथ के देशों के बीच संबंधों की जड़ें इतिहास में गहराई से निहित हैं। भारत ने अपनी आजादी के बाद से ही इन देशों के साथ साझेदारी और सहयोग को प्राथमिकता दी है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन (Non-Aligned Movement – NAM) के संस्थापक सदस्य के रूप में, भारत ने वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ समानता, सहयोग और स्वावलंबन की भावना से संबंध स्थापित किए। भारत ने हमेशा विकासशील देशों के लिए वैश्विक स्तर पर न्यायपूर्ण और संतुलित आर्थिक नीतियों की वकालत की है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन (WTO), और अन्य बहुपक्षीय संगठनों में भारत ने ग्लोबल साउथ के विकासशील देशों के हितों का समर्थन किया है। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने भारत को एक नेता और साझेदार के रूप में स्थापित किया है, विशेष रूप से अफ्रीका, दक्षिण एशिया और लैटिन अमेरिका के देशों के साथ।

भारत के लिए, ग्लोबल साउथ के साथ रणनीतिक आर्थिक सहयोग के कई प्रमुख उद्देश्य हैं:

- ग्लोबल साउथ के देशों में भारतीय उत्पादों और सेवाओं के लिए नए बाजार विकसित करना।
- इन देशों में कच्चे माल और ऊर्जा संसाधनों की आपूर्ति सुनिश्चित करना।
- तकनीकी और नवाचार के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाना।
- वैश्विक मंचों पर आपसी सहयोग और समर्थन की संभावनाएँ।

वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण के साथ, भारत ने अपनी आर्थिक नीतियों में सुधार किए हैं, जिससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश के लिए बेहतर अवसर पैदा हुए हैं। इन प्रवृत्तियों ने भारत को वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने में मदद की है। ग्लोबल साउथ के देशों के साथ साझेदारी से भारत को नए सहयोगात्मक ढांचे में शामिल होने का अवसर मिला है, जो न केवल व्यापारिक और निवेश संबंधों को मजबूत करता है, बल्कि वैश्विक आर्थिक प्रणाली में एक नई शक्ति संतुलन को भी स्थापित करता है।

भारत और ग्लोबल साउथ का आर्थिक परिदृश्य:

भारत विश्व की सबसे तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। पिछले कुछ दशकों में, भारत ने अपनी आर्थिक संरचना में गहरे बदलाव किए हैं, जिसके परिणामस्वरूप यह वैश्विक व्यापार, निवेश और विकास के प्रमुख केंद्रों में शामिल हो गया है। भारत वर्तमान में दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इसका सकल घरेलू उत्पाद (GDP) लगातार बढ़ रहा है, और यह मुख्य रूप से सेवा क्षेत्र, विनिर्माण और कृषि पर निर्भर है। भारत की विशाल जनसंख्या और युवा कार्यबल इसकी आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसकी श्रम शक्ति इसे वैश्विक निवेशकों और कंपनियों के लिए आकर्षक बाजार बनाती है।

भारत वैश्विक व्यापार में अपनी पकड़ मजबूत कर रहा है, विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स, वस्त्र, और कृषि उत्पादों के निर्यात में। साथ ही, यह उभरते बाज़ारों में विदेशी निवेश को आकर्षित कर रहा है। ग्लोबल साउथ में शामिल देशों की अर्थव्यवस्थाओं में व्यापक विविधता है। कुछ देश जैसे कि चीन और ब्राजील अपनी मजबूत औद्योगिक और कृषि अर्थव्यवस्थाओं के लिए जाने जाते हैं, जबकि कई अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी देशों की अर्थव्यवस्था अभी भी मुख्य रूप से प्राथमिक संसाधनों (कृषि, खनन) पर निर्भर है।

इन देशों में प्राकृतिक संसाधनों की बहुतायत है, लेकिन उनका उपयोग और वितरण उचित रूप से नहीं हो पाता। इसके कारण इन देशों की आर्थिक वृद्धि धीमी रही है। इनमें से कई देशों को वैश्विक व्यापार में सीमित भागीदारी, तकनीकी अवसंरचना की कमी, भ्रष्टाचार और अनियमित सरकारी नीतियों जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही, इन देशों में राजनीतिक अस्थिरता भी आर्थिक प्रगति में बाधा बनती है।

ग्लोबल साउथ की चुनौतियाँ और अवसर

चुनौतियाँ:

1. गरीबी और असमानता: ग्लोबल साउथ के अधिकांश देशों में गरीबी एक प्रमुख समस्या है। वहाँ की बड़ी आबादी आवश्यक सेवाओं, जैसे कि स्वास्थ्य, शिक्षा और स्वच्छता तक पहुंच से वंचित है। इसके साथ ही, आय असमानता भी एक बड़ा मुद्दा है।
2. अवसंरचना की कमी: कई विकासशील देशों में बुनियादी ढांचे की कमी है, जिससे उद्योगों का विकास और निवेश की संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं। इसके साथ-साथ, परिवहन, संचार और ऊर्जा आपूर्ति में भी सुधार की आवश्यकता है।
3. प्राकृतिक संसाधनों का अपूर्ण उपयोग: ग्लोबल साउथ के कई देश प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध हैं, लेकिन उचित तकनीकी और वित्तीय साधनों की कमी के कारण वे इन संसाधनों का पूरा उपयोग करने में सक्षम नहीं होते। इससे इन देशों की आर्थिक क्षमता का पूरा लाभ नहीं मिल पाता।

4. शिक्षा और मानव संसाधन विकास: इन देशों में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत कम है, जिससे कार्यबल की गुणवत्ता प्रभावित होती है। यह आर्थिक विकास की गति को धीमा कर देता है।

अवसर:

1. प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता: ग्लोबल साउथ के कई देशों में अपार प्राकृतिक संसाधन हैं, जो उन्हें वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के अवसर प्रदान करते हैं। यदि इन संसाधनों का सही प्रबंधन किया जाए, तो यह क्षेत्रीय और वैश्विक अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सकते हैं।
2. बढ़ती जनसंख्या और उपभोक्ता बाजार: इन देशों में युवा जनसंख्या की अधिकता है, जो आने वाले दशकों में एक बड़ा उपभोक्ता बाजार प्रदान करेगी। इस बढ़ती आबादी को देखते हुए, निवेश के अवसर भी बढ़ रहे हैं, खासकर शिक्षा, स्वास्थ्य, और बुनियादी ढांचे में।
3. दक्षिण-दक्षिण सहयोग के अवसर: ग्लोबल साउथ के देशों के बीच सहयोग बढ़ रहा है। दक्षिण-दक्षिण व्यापार और निवेश की पहल से इन देशों के बीच आर्थिक और तकनीकी सहयोग में वृद्धि हो रही है। इस तरह के सहयोग से नई आर्थिक नीतियों और प्रौद्योगिकियों को अपनाने के अवसर बढ़ रहे हैं।

भारत और ग्लोबल साउथ के बीच ऐतिहासिक संबंध

भारत और ग्लोबल साउथ के देशों के बीच ऐतिहासिक रूप से गहरे और व्यापक संबंध रहे हैं, जो मुख्य रूप से औपनिवेशिक इतिहास राजनीतिक समानताएँ और आर्थिक सहयोग पर आधारित हैं। भारत ने 1950 और 1960 के दशक में ग्लोबल साउथ के साथ अपने राजनीतिक और कूटनीतिक संबंधों को मजबूत किया, जब उसने गुटनिरपेक्ष आंदोलन की अगुवाई की। यह आंदोलन औपनिवेशिक विरासत वाले देशों के एकजुटता का प्रतीक था।

वर्तमान समय में भारत की भूमिका

भारत ने ग्लोबल साउथ के देशों के साथ अपने आर्थिक संबंधों को व्यापक और गहरा किया है। भारत की विदेशी नीति में इन देशों के साथ आर्थिक साझेदारी और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के साथ मजबूत संबंध बनाना प्राथमिकता रही है। भारत ने अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और एशिया के कई देशों के साथ व्यापार और निवेश बढ़ाया है। कई भारतीय कंपनियाँ इन देशों में निवेश कर रही हैं, और वहाँ बुनियादी ढाँचे, आईटी, फार्मा और कृषि जैसे क्षेत्रों में काम कर रही हैं। भारत ग्लोबल साउथ के देशों को तकनीकी और डिजिटल सहयोग प्रदान कर रहा है, विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य और कृषि तकनीक के क्षेत्र में।

रणनीतिक आर्थिक सहयोग के क्षेत्र:

व्यापार और निवेश:

भारत ने ग्लोबल साउथ के कई देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते(FTAs) और प्राथमिकता प्राप्त व्यापार समझौते (Preferential Trade Agreements) किए हैं, जिनका उद्देश्य व्यापार बाधाओं को कम करना और आपसी आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना है। उदाहरण के लिए, भारत और अफ्रीकी देशों के बीच व्यापार संबंधों को मजबूत करने के लिए समझौते किए गए हैं। भारत का उद्देश्य इन समझौतों के माध्यम से अपने उत्पादों के लिए नए बाजारों को खोलना और विकासशील देशों में भारतीय व्यापार को बढ़ावा देना है।

भारत ने पिछले कुछ दशकों में ग्लोबल साउथ के देशों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश(FDI) को बढ़ाया है। विशेष रूप से, अफ्रीका, दक्षिण पूर्व एशिया और लैटिन अमेरिका के देशों में विभिन्न उद्योगों में भारतीय कंपनियों ने निवेश किया है, जिनमें सूचना प्रौद्योगिकी, निर्माण, और कृषि मुख्य हैं। इसके साथ ही, भारतीय उत्पादों (जैसे फार्मास्युटिकल्स, कपड़ा, और मशीनरी) का निर्यात ग्लोबल साउथ के देशों में बढ़ रहा है, जिससे भारत के लिए विदेशी मुद्रा का आगमन हो रहा है।

भारतीय कंपनियाँ, विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स, और विनिर्माण क्षेत्रों में, ग्लोबल साउथ के देशों में तेजी से प्रवेश कर रही हैं। टाटा, महिंद्रा, रिलायंस, और इंफोसिस जैसी कंपनियाँ इन देशों में निवेश कर रही हैं, जिससे स्थानीय विकास को गति मिल रही है और साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था को भी लाभ हो रहा है।

ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधन (Energy and Natural Resources):

भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए ग्लोबल साउथ के देशों का विशेष महत्व है, क्योंकि इनमें से कई देश ऊर्जा संसाधनों से समृद्ध हैं, जैसे तेल, प्राकृतिक गैस, और कोयला। भारत ने विशेष रूप से अफ्रीकी देशों, मध्य पूर्व, और लैटिन अमेरिकी देशों में ऊर्जा स्रोतों के विकास और निवेश के लिए रणनीतिक साझेदारी की है। भारतीय कंपनियाँ जैसे ONGC और Indian Oil Corporation ने इन देशों में ऊर्जा संसाधनों के दोहन के लिए निवेश किया है। यह साझेदारी न केवल भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करती है बल्कि ग्लोबल साउथ के देशों के लिए भी महत्वपूर्ण निवेश और तकनीकी सहायता प्रदान करती है।

भारत और ग्लोबल साउथ के देशों के बीच कच्चे माल और खनिज संसाधनों (जैसे तांबा, कोबाल्ट, लोहा, और बॉक्साइट) के व्यापार का बढ़ता स्तर दोनों पक्षों के लिए आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह साझेदारी भारतीय उद्योगों की कच्चे माल की जरूरतों को पूरा करती है और साथ ही उन विकासशील देशों को आर्थिक लाभ देती है जो इन संसाधनों के निर्यातक हैं।

विनिर्माण और औद्योगिक सहयोग:

भारत ने ग्लोबल साउथ के देशों के साथ विनिर्माण क्षेत्र में भी सहयोग बढ़ाया है। विशेष रूप से मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसी पहलों के तहत, भारत उन देशों के साथ साझेदारी कर रहा है जहाँ कच्चे माल की उपलब्धता अधिक है लेकिन तकनीकी दक्षता की कमी है। इससे इन देशों के साथ संयुक्त रूप से उत्पादों का निर्माण और उत्पादन बढ़ा है। उदाहरण के तौर पर, भारतीय ऑटोमोबाइल कंपनियाँ अफ्रीका और दक्षिण एशिया में अपने उत्पादन संयंत्र स्थापित कर रही हैं, जिससे इन क्षेत्रों में स्थानीय रोजगार और औद्योगिक विकास हो रहा है।

भारत ग्लोबल साउथ के देशों में बुनियादी ढांचे के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। यह सहयोग सड़क निर्माण, परिवहन नेटवर्क, बंदरगाहों, और ऊर्जा संयंत्रों के विकास के रूप में सामने आता है। भारतीय इंजीनियरिंग और निर्माण कंपनियाँ इन परियोजनाओं में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं, जिससे इन देशों में औद्योगिक विकास को गति मिल रही है।

तकनीकी सहयोग और नवाचार:

भारत की सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल सेवाओं में विशेषज्ञता के कारण ग्लोबल साउथ के देशों के साथ तकनीकी सहयोग में भारी वृद्धि हुई है। भारतीय आईटी कंपनियाँ (जैसे TCS, Infosys) अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के देशों में डिजिटल सेवाओं का प्रसार कर रही हैं, जिससे उन देशों में डिजिटल बुनियादी ढांचा मजबूत हो रहा है। डिजिटल पेमेंट, ई-गवर्नेंस, और स्मार्ट सिटी जैसी परियोजनाओं में भी भारत तकनीकी विशेषज्ञता प्रदान कर रहा है, जिससे ग्लोबल साउथ के देशों की डिजिटल प्रगति हो रही है। भारत ने विकासशील देशों को तकनीकी हस्तांतरण और नवाचार में भी मदद की है। उदाहरण के लिए, भारत ने स्वास्थ्य क्षेत्र में कम लागत वाली दवाओं और उपकरणों के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाई है, जिससे इन देशों में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हो रहा है। इसके अलावा, भारत के साथ कृषि प्रौद्योगिकी और हरित ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग ने विकासशील देशों को टिकाऊ कृषि और ऊर्जा समाधानों की दिशा में महत्वपूर्ण मदद दी है।

भारत द्वारा की गई पहलें और नीतियाँ:

भारत ने ग्लोबल साउथ के देशों के साथ अपने आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के लिए विभिन्न पहलें और नीतियाँ बनाई हैं। ये नीतियाँ न केवल व्यापार और निवेश को बढ़ावा देती हैं, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में तकनीकी, बुनियादी ढांचे और सामाजिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। निम्नलिखित बिंदुओं में विस्तार से चर्चा की गई है:

प्रमुख आर्थिक और व्यापारिक नीतियाँ:

- मुक्त व्यापार समझौते (FTAs): भारत ने कई ग्लोबल साउथ देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिनमें दक्षिण एशियाई संघ (SAARC) देशों के साथ समझौते शामिल हैं। इन समझौतों का उद्देश्य व्यापार की बाधाओं को कम करना और दोनों पक्षों के बीच व्यापार को बढ़ावा देना है।
- एक्ट ईस्ट नीति: यह नीति भारत के पूर्वी पड़ोसी देशों के साथ आर्थिक और राजनीतिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई है। इसमें आसियान देशों

और अन्य पूर्वी एशियाई देशों के साथ व्यापार, निवेश, और संस्कृति के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया जाता है।

- ग्लोबल साउथ के लिए विकास साझेदारी (Development Partnership): भारत ने विकासशील देशों के साथ साझेदारी में सहायता देने के लिए विभिन्न पहलें शुरू की हैं। इनमें वित्तीय सहायता, तकनीकी सहायता, और बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए सहयोग शामिल हैं।

अंतर्राष्ट्रीय मंचों में भूमिका:

BRICS (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) एक महत्वपूर्ण बहुपक्षीय मंच है, जो विकासशील देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है। भारत इस मंच का सक्रिय सदस्य है और यहाँ व्यापार, निवेश, और विकास के मुद्दों पर चर्चा करता है। IBSA (भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका) सहयोग संगठन के माध्यम से, भारत ने दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहलों की शुरुआत की है। इस संगठन के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में विकास और आर्थिक सहयोग के लिए नए रास्ते खोले जा रहे हैं।

विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए लाभ:

भारत का ग्लोबल साउथ के साथ रणनीतिक आर्थिक सहयोग विकासशील देशों के लिए कई महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है। यह लाभ विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई देते हैं, जैसे कि आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, प्रौद्योगिकी का विस्तार, व्यापारिक संबंधों का विकास, बुनियादी ढाँचा, और सामाजिक विकास।

भारत के द्वारा विकासशील देशों में किए गए निवेश से इन देशों की अर्थव्यवस्था में संजीवनी मिलती है। भारतीय कंपनियाँ जैसे टाटा, महिंद्रा, और अन्य ने विभिन्न क्षेत्रों में निवेश करके स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा दिया है। भारतीय कंपनियों के आने से स्थानीय व्यवसायों को सहयोग मिलता है, जिससे उनकी उत्पादकता और प्रतिस्पर्धा में सुधार होता है। यह छोटे और मध्यम उद्यमों के विकास में सहायक होता है। भारतीय कंपनियों के विस्तार से स्थानीय श्रम बल को रोजगार मिलता है, जिससे बेरोजगारी की समस्या कम होती है। साथ ही, यह स्थानीय लोगों की आय में वृद्धि करता है।

भारत अपनी उन्नत प्रौद्योगिकियों को विकासशील देशों के साथ साझा कर रहा है। इससे इन देशों की उत्पादन क्षमता और प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि होती है। भारतीय कंपनियाँ अक्सर अनुसंधान और विकास (R&D) में निवेश करती हैं। यह विकासशील देशों को नई तकनीकों और प्रक्रियाओं के उपयोग में मदद करता है, जिससे उनके उद्योगों में नवाचार होता है। भारत का तकनीकी सहयोग डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देता है, जिससे विकासशील देशों में इंटरनेट और मोबाइल तकनीक का उपयोग बढ़ता है। इससे जानकारी और सेवाओं तक पहुँच में सुधार होता है।

भारत और ग्लोबल साउथ के देशों के बीच व्यापारिक संबंधों का विस्तार होता है, जिससे विकासशील देशों को नए निर्यात बाजार प्राप्त होते हैं। यह उनके लिए आर्थिक विविधता का एक महत्वपूर्ण स्रोत बनता है। भारत ने कई विकासशील देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों (FTAs) पर हस्ताक्षर किए हैं, जिससे दोनों पक्षों के बीच व्यापार में बाधाएँ कम होती हैं और व्यापारिक संबंध मजबूत होते हैं। भारतीय कंपनियों के सहयोग से स्थानीय उत्पादों को वैश्विक बाजार में पहुँचने का अवसर मिलता है, जिससे विकासशील देशों के उत्पादों की मांग बढ़ती है।

भारत ने कई विकासशील देशों में बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए सहयोग दिया है, जैसे कि सड़कें, रेल, बंदरगाह, और एयरपोर्ट। यह अवसंरचना विकास इन देशों की आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देता है। भारत द्वारा विकासशील देशों को वित्तीय सहायता, जैसे कि ऋण, अनुदान, और तकनीकी सहायता प्रदान की जाती है। यह सहायता विकासशील देशों को उनके विकास लक्ष्यों को पूरा करने में मदद करती है। भारत ने कई विकासशील देशों के साथ साझेदारी में विभिन्न विकास परियोजनाएँ शुरू की हैं, जो स्थानीय समुदायों के लिए लाभकारी होती हैं।

भारत ने विकासशील देशों में स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा में सुधार के लिए कई पहल की हैं। इसमें भारतीय चिकित्सकों और शिक्षकों का योगदान, जैसे कि स्वास्थ्य कैंप और शैक्षणिक कार्यक्रम शामिल हैं। भारत ने कृषि क्षेत्र में विकासशील देशों के साथ सहयोग बढ़ाया है, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होती है। भारतीय कृषि प्रौद्योगिकियाँ और विशेषज्ञता कृषि में नवाचार को बढ़ावा देती हैं। भारत ने विकासशील देशों में महिलाओं और बच्चों के विकास के लिए विशेष कार्यक्रमों की स्थापना की है। यह उनके सामाजिक-आर्थिक विकास में सहायक होते हैं।

निष्कर्ष:

ग्लोबल साउथ के साथ भारत का रणनीतिक आर्थिक सहयोग एक महत्वपूर्ण तत्व है जो न केवल भारत की वैश्विक स्थिति को मजबूत करता है, बल्कि विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए भी महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है। यह सहयोग विभिन्न क्षेत्रों में, जैसे व्यापार, निवेश, तकनीकी सहयोग, और बुनियादी ढांचे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत द्वारा ग्लोबल साउथ के देशों के साथ की गई पहलें, जैसे कि व्यापार समझौतों, तकनीकी हस्तांतरण, और ऊर्जा सुरक्षा के प्रयास, विकासशील देशों के आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। यह न केवल रोजगार सृजन और आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं, बल्कि सामाजिक और मानवीय विकास के क्षेत्र में भी सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

REFERENCES

1. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय. (2015). भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन घोषणापत्र 2015. विदेश मंत्रालय.
2. ब्रिक्स संयुक्त वक्तव्य. (2021). ब्रिक्स शिखर सम्मेलन संयुक्त घोषणा 2021.
3. कुमार, ए. (2018). भारत का व्यापारिक संबंध और वैश्विक दक्षिण: अवसर और चुनौतियाँ. इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 72(4), 145-162.
4. चतुर्वेदी, स. (2017). भारत का विकास सहयोग: दक्षिण-दक्षिण सहयोग में भूमिका. योजना, अंक-45, 34-47.
5. श्रीवास्तव, आर. के. (2015). *भारत की विदेश नीति और दक्षिण-दक्षिण सहयोग*. प्रभात प्रकाशन.
6. Nayyar, D. (2013). South-South economic cooperation: Problems, progress, and prospects. Oxford University Press.
7. https://mea.gov.in
8. https://brics-russia2020.ru
9. https://www.southcentre.int
10. https://unctad.org